MT EDUCARE LTD.

ICSE X **SUBJECT : HINDI**

BOARD PAPER – 2014

ANSWERSHEET

(खण्ड'क')

A.1

1) **''भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन''**

संस्कृति अंग्रेज़ी शब्द 'Culture' का पर्याय है किसी राष्ट्र और समाज की श्रेष्ठतम उपलब्धियाँ ही संस्कृति हैं । संस्कृति समाज या राष्ट्र की सदियों की उपलब्धियों का समूह हैं । संस्कृति में भूत और वर्तमान के आध्यात्मिक, सामाजिक और धर्मिक मूल्यों का समावेश होता है, जो किसी समाज या राष्ट्र की पहचान होते हैं ।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है । यह आज भी जीवित है । रोम, मिस्त्र जैसी सभ्यताएँ और संस्कृतियों का आज कहीं अता-पता नहीं, पर भारतीय संस्कृति आज भी जीवित है । सदियों सक दुश्मनों ने इसे मिटाने की भरपूर कोशिश की, मगर वह नष्ट न हो सकी । महाकवि इकबाल ने ठीक ही कहा है -

'यूनान मिश्र रोमाँ सब मिट गए जहाँ से,
बाकी अभी तलक है नामो निशाँ हमारा ।'

दुनिया के अन्य देश पाषाण युग में ही जी रहे थे, उस समय भी हमारी संस्कृति उच्चता को प्राप्त थी । इसी संस्कृति उच्चता को प्राप्त थी । इसी संस्कृति ने दुनिया को ज्ञान का आलोक दिया ।

भारतीय संस्कृति अत्यंत महान है । इसकी सबसे बड़ी विशेषता है, विभिन्नता में एकता की भावना। भारत में अनेक प्रकार की भौगोलिक, रीति-रिवाज़ और रहन-सहन संबंधी, भाषा एवं साहित्य संबंधी, धर्म, मत, संप्रदाय संबंधी तथा परंपराओं और आस्था संबंधी भिन्नताएँ विद्यमान हैं तथापि कश्मीर से कन्याकुमारी तथा असम से गुजरात तक सभी लोग एकसूत्र में बँधे हैं । हमारे धार्मिक ग्रंथ, जीवन-दर्शन, तीर्थ स्थान, पूजा-पद्धति आदि में अद्भुत समानता है । सभी भारतीय आस्थावादी हैं और अध्यात्म में विश्वास, करते हैं । हमारी संस्कृति समन्वयवादी है । ईश्वर में विश्वास उदारता एवं मानव कल्याण की भावना हमारी संस्कृति की अनूठी पहचान है । धर्म और दर्शन की दृष्टि से संपूर्ण भारतवर्ष एक है । भारतीय संस्कृति सहिष्णु भी है । अनेक धर्मों एवं मतों को इसने ग्रहण कर लिया है । हमारी संस्कृति हमें शांति, अहिंसा, उदारता, दया और क्षमा का पाठ पढ़ाती है । प्रसाद जी ने ठीक ही कहा है- ''यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि, जीवन के चार आश्रम एवं चार पुरुषार्थ भारतीय संस्कृति की ही देन हैं । भारतीय संस्कृति ने ही विश्व को 'पंचशील', 'परोपकार' तथा 'सदभाव' एवं सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया ।

पाश्चात्य संस्कृति में अध्यात्म को कोई स्थान नहीं है । भारतीय संस्कृति में जीव के आवागमन-चक्र और जन्मांतरवाद पर विश्वास है, पर पाश्चात्य संस्कृति ऐसा नहीं मानती । पाश्चात्य संस्कृति के अनुसार जीव की मृत्यु के बाद आत्मा अनंत में मिलकर आनंत्य प्राप्त करती है जबकि भारतीय संस्कृति के अनुसार आत्मा अजर, अमर और अविनाशी है । भारतीय संस्कृति का प्रमुख आधार है -'वसुधैव कुटुंबकम्' पर पाश्चात्य संस्कृति अपने ही धर्म को महत्त्व प्रदान करती है । समन्वयभाव हमारी संस्कृति की देन है जब पाश्चात्य संस्कृति का ऐसा कोई आदर्श नहीं है । भारतीय संस्कृति समष्टिमूलक का विशाल भावना से युक्त है जबकि पाश्चात्य संस्कृति व्यष्टिवाद को पुष्ट करती है । पाश्चात्य संस्कृति में वर्णाश्रम व्यवस्था को कोई स्थन नहीं दिया गया है । भारतीय संस्कृति के षोडश संस्कारों का पाश्चात्य संस्कृति में कोई उल्लेख नहीं है । भरतीय संस्कृति की अन्य विशेषताएँ हैं - 'नारी शक्ति का प्रतीक है' तथा 'माता,पिता, आचार्य एवं अतिथि देववत् पूज्य हैं ।'

यद्यपि पाश्चात्य संस्कृति अहम् तथा निजी जीवन को महत्त्व देती है, धन-संपत्ति पर जोर देकर भारतीय संस्कृति अहम् तथा निजी जीवन को महत्त्व देती है, धन-संपत्ति पर जोर देकर भारतीय संस्कृति के आदर्श 'त्याग' को दुत्कारती है, पारिवारिक विघटन, विसंगति बोध आदि प्रवृत्तियाँ पश्चिम की ही देन हैं तथापि उसमें कुछ श्रेष्ठ बातें भी हैं, जो अपनाने योग्य हैं ।

उस संस्कृति में राष्ट्रीय चरित्र, ईमानदारी, अनुशासन तथा कर्म निष्ठा, भ्रष्टाचार रहित जीवन तथा पर्यावरण संबंधी चेतना को महत्त्व दिया गया है पाश्चात्य संस्कृति में राष्ट्र-प्रेम पर बल दिया गया है । इन्हीं गुणों के कारण पश्चिमी जगत ने इतनी उन्नति की तथा विश्व के अग्रणी देशों में गिने जाने लगे । आज आवश्यकता इस बात की है कि हम पश्चिमी संस्कृति के उन उदात्त मूल्यों को अपनाएँ जिससे हमारा जीवन भ्रष्टाचार मुक्त, कर्तव्यनिष्ठ, अनुशासित बन सके तथा हम राष्ट्रभक्त बनकर अपने देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचा सकें । खेद का विषय है कि हम पश्चिमी संस्कृति के हीन प्रभाव को ग्रहण कर रहे हैं और उसके श्रेष्ठ गुणों की उपेक्षा कर रहे हैं । **[15]**

2) **''आज खेलों में फैला भ्रष्टाचार ''**

वर्तमान में जहाँ भी देखिए वहीं भ्रष्टाचार व्याप्त है । भ्रष्टाचार का अर्थ केवल रिश्वत के रूप में रुपये लेना ही नहीं, बल्कि भाई–भतीजावाद, खाद्य पदार्थों में मिलावट करना, मुनाफाखोरी, अनैतिक ढंग से जान-बुझकर धन संग्रह करना, कानूनों की अवहेलना करना आदि भी भ्रष्टाचार के रूप हैं । खेलों में भी यही भ्रष्टाचार व्याप्त है । सक्षम अधिकारी अपने अधिकारों का दुरूपयोग करके अयोग्य लोगों का चयन करते हैं । आज समाचार-पत्र हाथ में लेते ही खेल पृष्ठ पर कॉमनवेल्थ घोटाले या मैच फ़िक्सिंग के मामले प्रकाश में आते रहते हैं, जो अति निन्दनीय कृत्य हैं, जिससे मैं भावनात्मक रूप से जुड़ा हूँ । यह खेल सर्वप्रथम यूरोपीय देश इंग्लैण्ड से प्रारम्भ होकर भारत आया । इस खेल को पहले भारत में शौकिया रूप से नवाबों, राजाओं तथा राजकुमारों ने अपनाया । आजकल तो यह खेल अति लोकप्रिय होकर प्रत्येक जगह खेला जाने लगा है । चाहे वह विद्यालय हो, महाविद्यालय, शहर हो या गाँव । इस खेल में टीमें होती हैं । दोनों टीमों में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं । इसका मैदान वृत्ताकार होता है । इस खेल में निश्चित दूरी पर आमने-सामने तीन-ती विकेट भूमि पर गाड़ दिए जाते हैं, इस खेल में एक अम्पायर होता है ।

अम्पायर ही निर्णय देता है कि खिलाड़ी आउट हुआ है या नहीं । खिलाड़ियों द्वारा लगाए गए चौके, छक्के, नो बॉल आदि का निरीक्षण भी अम्पायर ही करता है । जिस टीम के रन अधिक होते हैं, वही टीम विजयी होती हे जीवन में खेलों का अति महत्त्व है । पहले कहा जाता था, 'खेलोगे-कूदोगे होगे खराब', अब कहा जाता है, 'खेलोगे-कूदोगे बनोगे नवाब' । **[15]**

3) **''जीवन में घटी एक हास्यापद घटना''**

कभी-कभी मानव जीवन में ऐसी घटनाएँ घटती हैं जो अपनी अमिट छाप छोड़ जाती हैं । ये घटनाएँ दु:खद भी होती हैं और सुखद भी । जब कभी स्मृति पटल पर इनकी पुनरावृत्ति होती है तब ये हमारे मस्तिष्क पटल पर जीवन्त रूप में प्रकट हो जाती हैं ।

कहा जाता है कि मनुष्य का बचपन उसकी सबसे सुखद अवस्था होती हे । उसी अवस्था में विद्यालय के खट्टे-मीठे अनुभव उसकी स्मृति बन जाते हैं । उन्हीं दिनों की यह घटना है, जिसे याद करके मैं सोचने के लिए विवश हो जात हूँ कि काश वे दिन फिर से जीवन में आ जाते । मैं कक्षा छ: का विद्यार्थी था । हमारे विद्यालय में यूँ तो बहुत सारे कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किये जाते थे परन्तु हम बच्चों के लिए बाल दिवस अर्थात् जवाहरलाल नेहरु जयन्ती 14 नवम्बर एक विशेष दिवस हुआ करता था । इस दिन हमारे अध्यापकों एवं अन्य कर्मचारियों के द्वारा कुछ विशेष कार्यक्रम आयोजित किये जाते थे । इसमें प्रधानाचार्य का भी कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय होता था । बच्चों के मनोरंजन के लिए जब अध्यापक आदि सभी विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे नाटक, गीत, नृत्य आदि प्रस्तुत करते थे तब हमें बहुत अच्छा लगता था । हम लोग बहुत उत्सुक रहते थे यह जानने के लिए कि हमारे गुरुजन हमारे लिए क्या कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे ।

जब मैं कक्षा छ : का छात्र था उस समय अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त नृत्य प्रस्तुत किया गया । उस समय एक फिल्मी गाना 'कजरारे कजरारे कजरारे तेरे नैना' अपनी चरम सीमा पर था । इस गाने की सब जगह धूम थी । अचानक हमारी वरिष्ठ अध्यापिका ने लाउडस्पीकर पर यह घोषणा की कि ''अब आपके समक्ष एक नृत्य प्रस्तुत किया जाने वाला है । सभी दिल थामकर बैठ गये तथा प्रतीक्षा करने लगे कि आखिर इस नृत्य को कौन करने वाला है । तभी पर्दा हटा तो क्या देखता हूँ कि हमारे पीटी मास्टर और चतुर्थ श्रेणी के दो कर्मचारी लहँगा चोली पहन कर स्टेज पर आये और ऐश्वर्या राय, अमिताभ बच्चन और अभिषेक बच्च्न की नृत्य मुद्र में ही 'कजरारे कजरारे कजरारे तेरे नैना' गीत पर जोरदार नृत्य करने लगे । उनके मुख के हाव-भाव तथ मटकती कमर को देखकर सभी छात्र हँस-हँस कर लोट-पोट हो गये । सारे बच्चे ताली बजा-बजा कर उनका उत्साह बढ़ा रहे थे और वे तीनों नृत्य में इतने मगन थे कि उन्हें किसी की परवाह ही नहीं थी । लगभग 15 मिनट तक वे तीनों नृत्य करते रहे । पूरा वातावरण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था । ऐसा मनोरंजक नृत्य, वह भी पुरुषों के द्वारा मैंने कभी नहीं देखा था । उनके नृत्य की वह छवि मेरे नेत्रों में बस गई थी ।

अब मैं कक्षा दस का छात्र हूँ और वे तीनों ही विद्यालय से जो चुके हैं परन्तु आज भी जब 14 नवम्बर अर्थात् 'बाल दिवस' का दिन आता है तब उस नृत्य की याद करके मैं हँसे बिना नहीं रहता ।

उन तीनों लोगों ने हमारा जो मनोरंजन किया उसे याद करके मुझे ऐसा लगता है कि हमें भी ऐसा बनना चाहिए कि हम भी किसी का मनोरंजन करके लोगों को हँसा सकें । हँसो और हँसाओ हमारे जीवन का सिद्धान्त होना चाहिए । हँसने से मनुष्य स्वस्थ रहता है । **[15]**

4) **''जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।''**

जिसकी रक्षा भगवान करता है उसका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता । कहते हैं कि, सच्चा सन्त प्रारब्ध को भी कम कर सकता है और 'होनी' को भी टाल सकता है । 'सन्त' ईश्वर का ही प्रतीक होता है । वह निरन्तर ईश्वर की सेवा में रहता हैइसलिए ईश्वर उसकी हर इच्छा को पूरा करते हैं । सन्त शिरोमणि रामदास के पास एक बालक उनकी शिष्यता ग्रहण करने के लिए आया । समर्थ रामदास ने बालक के तेज को पहचान कर उसे अपना शिष्य बना लिया । एक दिन प्रात : वह बालक भिक्षा मां गने को एग गाँव में आया । उस गाँव में एक तांत्रिक रहता था जो स्वभाव से क्रोधी था । गाँव के कुछ शरारती बच्चों ने उस बालक को उसी के घर का दरवाजा दिखा दिया कि वह वहाँ से भिक्षा माँगे । बालक ने ऐसा ही किया । तांत्रिक जो पुजा कर रहा था उठकर आया और बोला कि यहाँ क्यों आया है ? बालक ने उत्तर दिया कि गुरु की आज्ञा से भिक्षा माँगने आया हूँ । तांत्रिक ने भिक्षा की जगह तीन प्रश्न पूछे कि वह अपने गुरु से पूछ कर बताये– (i) सूर्य से बड़ा कौन है ? (ii) पृथ्वी से महान् कौन है ? (iii) होनी को कौन टाल सकता है ?

वह बालक अन्य घरों से भिक्षा माँगकर वापस आया और गुरु के लिए भोजन बनाया । उसने गुरु को तीनों प्रश्नों को बता दिया । गुरु ने मुस्कराकर कहा कि कल सुबह उसी दरवाजे पर जाना और उससे कहना– (i) सूर्य से बड़ा पिता है । (ii) पृथ्वी से महान माता है । (iii) तीसरे प्रश्न का उत्तर गुरु जी स्वयं उसी तांत्रिक को देंगे । बालक ने अगले दिन जाकर ऐसे ही कह दिया । तांत्रिक क्रोधित हुआ और शाप दिया कि जा कल सुबह सूरज निकलने से पहले तू मर जायेगा अपने गुरू से कह देना । यह सुनकर बाल के तो होश उड़ गए और किसी प्रकार डरते-डरते भिक्षा लेकर वापस आया और गुरु के लिए भोजन बनाया और उनको खिलाया । गुरु जी समझ गए और उससे पूछा कि बालक आज तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया है ? बालक ने सारी बात बता दी । गुरु जी यह कहकर विश्राम करने चले गए कि अभी कल होने में तो बहुत देर है अभी से चिन्ता क्यों करता है ? परन्तु बालक को चैन कहाँ ? शाम हुई । शाम का भोजन बना । गुरु जी ने खाया । बच्चे ने डर के मारे न दोपहर को न शाम को कुछ नहीं खाया । गुरू जी ने बहुत समझाया कि सुबह होने में तो बहुत देर है अभी से चिन्ता क्यों करता है ? अब गुरु जी शयन करने लगे और उस बालक से कहा कि तू मेरे पैर दबाता रह और जब तक मैं न कहूँ कहीं जाना मत । बालक पैर दबाता रहा । आधी रात के उस तांत्रिक ने अपनी सिद्ध की हुई यक्षिणी को भेजा उस बालक की माँ का भेष बनाया और खीर का कटोरा लेकर बोली– '' बेटा ! तू बहूत दिनों से घर नहीं

आया हैं - ले मैं तेरे लिए खीर लाई हूँ खीर खा ले ।'' बालक ने उत्तर दिया– ''माँ! गुरु जी सोए हुए हैं और उनकी आज्ञा बिना मैं तेरे पास नहीं आ सकता । ला यहीं आकर खीर दे दे । '' लेकिन वह यक्षिणी गुरु जी के पास नही आई । फिर थोड़ी देर बाद उसके पिता के रूप में आई और डाँट कर कहा। '' अरे पुत्र ! तूने माँ को लौटा दिया । आ मेरे पास आ । '' पर बालक गुरु जी के पैर छोड़कर नही गया । थोड़ी देर में वह शक्ति क्रोधित हो उस तांत्रिक के पास गई और बोली– '' दुष्ट तूने आज एक सन्त का अहित करने भेजा जो मैं न कर पाई– अब मैं तेरे पास से जो रही हूँ ।

सुबह हुई । सूरज निकला गुरु जी उठे और बोले–''अरे बालक तू तो जिन्दा बैठा है तुझे तो इस समय तक मर जाना चाहिए ।'' तब तक शिष्य गुरु की शक्ति समझ चुका था । उसकी अश्रुधारा बहने लगी और गुरू के चरणो को धोने लगी । तभी वह तांत्रिक गुरु जी के चरणों में आकर गिर गया । गुरूजी बोले हे तांत्रिक! तेरे तीसरे प्रश्न का उत्तर यह है कि होनी को भी सच्चा संत टाल नहीं सकता ।''

सच ही कहा है कि

''जाको राखे साइयाँ मार सके नहिं कोइ
बाल ना बाँका कर सके जो जग बैरी होइ । '' **[15]**

5) प्रस्तुत चित्र में पाँच स्त्रियाँ दिखाई दे रही हैं । वे एक नलकृप (समरसीबिल) से पानी भर रही हैं । समर के पाइप में एक पॉलीथिन बाँध रखी है, क्योंकि समर के पानी का बहाव तेज होता है । पॉलीथिन से पानी भरना आसान हो जाता है । नलकूप के पास पानी भरने के लिए बहुत सारे बतैन और प्लास्टिक की केन भी रखी हुई है । स्त्रियों के पीछे एक आदमी बाल्टी लेकर इसी ओर आता दिखाई दे रहा है । इस चित्र को देखकर स्पष्ट प्रतीत होता है कि हमारे देश में जल का भयंकर संकट है । मनुष्य के शरीर की नसों के समान भारत में असंख्य नदियाँ बह रही हैं तथापि यहाँ पानी का अभाव है । लोग पानी की खोज में कभी इस नल पर कभी उस हैडपंप पर तो कभी कहीं और भटकते फिरते हैं । पानी कितना आवश्यक है इस बात को स्पष्ट करते हुए स्वयं रहीम कवित ने लिखा है–

रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून
पानी गये न ऊबरे, मोती मानुस चून ।

जल विश्व का अति विलक्षण द्रव है। सृष्टि के आदिकाल से ही जब ईश्वर ने संसार की रचना की उनके जीवन का आधार जल बना । आज येह अत्यन्त खेद का विषय है कि ईश्वर प्रदत्त इस अथाह प्राकृतिक सम्पदा का ही जीवन में अभाव हो गया है । ईश्वर ने जल स्त्रोतों की कमी नहीं की परन्तु मनुष्य ने उन जल स्त्रोत की ऊँचाई में अचानक वृद्धि या कमी, जल स्त्रोतों का अप्रत्याशित रूप से घटना अथवा बढ़ना जल-संकट का हिस्सा है ।

आज जल के अभाव की जो स्थिति है उसे देखकर प्रतीत होता है कि यदि यही हाल रहा तो निकट भविष्य में जल न मिलने के कारण प्राणियों की मृत्यु हो सकती है।

बड़े-बड़े चौराहों पर पानरी के लिए लम्बी कतारें, सिर पर घड़ों में दूर से पानी लाती महिलाएँ, जगह-जगह पर देखी जा सकती हैं । आज नलकूपों का जल-स्तर काफी नीचे जा चुका है । नदियाँ भी पानी की कमी के कारण कृशकाय दिखाई पड़ती हैं । जो देश-प्रकृति का पालना कहा जाता था, वहीं पर जल की कमी होना बड़ा हास्यास्पद विषय है ।

यह बड़ा गम्भीर चिन्तन का विषय है कि इस अथह जल सम्पदा का नाश अचानक कैसे हो गया । आखिर उसका क्या कारण दिन-प्रतिदिन वृक्षों की कटाई है । वृक्षों की कटाई से वर्षा बाधित हुई है। जब समय पर वर्षा ही नहीं होगी तो नदियों में पानी कहाँ से आयेगा? अति प्राचिन काल से ही हमारे देश में वृक्षों का अध्यात्मिक महत्त्व रहा है । इनकी पूजा-अर्चना की जाती रही है । यह मानव जीवन की सुख-समृद्धि के साधक हैं । यही वृक्ष बादलों का आह्वान करते हैं परन्तु दुर्भाग्य की बात है कि जब जंगल ही कट जायेंगे तो आह्वान कौन करेगा ? जल संकट के मूल में यही बात महत्त्वपूर्ण हे । वृक्षों की कटयाई ने प्राकृतिक संतुलन बिघाड़ दिया । अनावृष्टि,

अतिवृष्टि, सायक्लॉन, भूस्खलन और भूकम्प आदि सभी वृक्षों की कटाई के परिणाम हैं । खैर कारण कुछ भी हो परन्तु सच्चाई तो यह है कि आज प्राण जगत के समक्ष जल की एक ज्वलन्त समस्या है जो दिनों दिन सुरसा के मुख की तरह बढ़ रही है ।

प्रशासन शायद आम आदमी की इस परेशानी से अनभिज्ञ है । उसका कारण साफ-साफ उनके जीवन में इस अनुभव की कमी है– कहा भी गया है–

''जाके पैर न फटी बिवाई, सो कहा समझे पीर पराई''

किसी भी समस्या का समाधान तो करना ही पड़ता है और यह असम्भव भी नहीं है । सरकार को जनता की इस परेशानी को समझना चाहिए । सरकार को चाहिए कि बाढ़ वाले क्षेत्रों के जल-संचय हेतु बड़े-बड़े बैराज बनाये और जलाभाव वाले क्षेत्रों में उसे वितरित कराये । यह जल संकट को कम करने का सशक्त साधन साबित होगा, साथ ही जल का सदुपयोग होगा । जो लोग सीवर की लाइन या शहर की गन्दगी नदियों में बहाते हैं उनके विरुद्ध सरकार को कठोर कदम उठाने चाहिए । इससे जल प्रदूषण रोका जा सकता है ।

जल ईश्वर की अमूल्य सम्पदा है जो मानव मात्र के लिए सहज उपलब्ध होनी चाहिए यदि ऐसा नहीं है तो बड़ी लज्जा की बात है । इसलिए इसे हर मनुष्य को अबाध गति से प्राप्त कराना चाहिए । **[15]**

A.2

1) सेवा में
श्रीमान् पर्यटन अधिकारी,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश
दिनांक : 24-3-2014

विषय : <u>लखनऊ के दर्शनीय स्थलों की जानकारी प्राप्त करने हेतु पत्र</u>

मान्यवर महोदय,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपसे लखनऊ शहर की जानकारी प्राप्त करना चाहता हूँ । मैं व मेरे मित्र लखनऊ शहर के दर्शनीय स्थलों की यात्रा करना चाहते हैं । साथ ही जैसा कि लखनऊ, उत्तर प्रदेश की राजधानी तथा हमारे मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी का निवास स्थान है । मैंने सुना है वहाँ पर चिड़ियाघर तथा कुछ ऐतिहासिक स्थल भी हैं, जिसको देखना हमारे ज्ञान का हिस्सा बन सकता है ।

इस समय मेरी आई. सी. एस. ई. की परीक्षाएँ समाप्त हो चली हैं अतः छुट्टियों का सदुपयोग करने का यह अच्छा अवसर है। अतः आपसे विनम्र निवेदन हे कि मैं और मेरे मित्र इस स्थान का मनोरंजन पूर्ण अवलोकन कर सकें इसके लिए आप मुझे पत्र द्वारा जानकारी देकर मेरी सहायता करें इसमें विशेष रूप से ठहरने एवं घूमने की व्यवस्था करवाकर मुझे कृतार्थ करें । आपकी अति कृपा होगी ।

सधन्यवाद,
भवदीय
प्रवीण गुप्ता
19, सिविल लाइन्स
सूरसदन, आगरा - 2 **[7]**

2) 47, कमला नगर
आगरा
दिनांक : 24. 3. 2014

प्रिय अनुज शुभम,

शुभ आशीर्वाद।

अपरञ्च समाचार यह है कि दो दिन पहले मैं किसी काम से दिल्ली आया था तब मेरी भेंट तुम्हारे कक्षाध्यापक

से हुई थी । वह बता रहे थे कि तुम आजकल मोबाइल फोन पर बातें करने में अपना अधिकांश समय व्यतीत कर रहे हो । शुभम् यह अच्छी बात नहीं है, विशेष तौर पर विद्यालय में मोबाइल लाना मना है और तुम नियम तोड़ने का कार्य कर रहे हो । यह उचित नहीं है ।

पिताजी ने खर्च की परवाह न करके तुम्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त करने दिल्ली भेजा है । अतः तुम ईमानदारी से अपनी पढ़ाई करो । मोबाइल पर अधिकांश बातें तुम्हारी दोस्तों से ही होती होंगी । शायद तुम्हें पता नहीं है कि अधिक मित्रता अध्ययन में सबसे बड़ी बाधा है । मोबाइल से दोस्ती बढ़ेगी और समय बर्बाद होगा । जब पढ़ने बैठोगे, मोबाइल बजेगा, पढ़ाई चौपट हो जायेगी । ये मोबाइल फोन रात में नहीं सोने देते । मैं तुम्हारा अर्द्ध वार्षिक परीक्षाफल देखकर चौंक गया था । अध्यापक के बताने पर ही पता चला कि मोबाइल के कारण ही तुम्हारे अंक कम आये हैं ।

पिताजी ने मोबाइल तुम्हें इसलिए दिया था ताकि तुम घर पर समाचार बताते रहो । सच्चाई तो यह है कि विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी के लिए मोबाइल का यही सदुपयोग है । इसलिए अपना नं. बदलो और किसी को नया नं. मत दो जिससे तुम्हारे मित्र तुम्हारे अध्ययन में दखलन्दाजी न करें । ईमानदारी से अपनी पढ़ाई करो । माताजी-पिताजी का तुम्हें प्रेम भरा आशीर्वाद ।

तुम्हारा अग्रज,

क.ख.ग. **[7]**

A.3

i) आचार्य को ऐसे सहायकों की आवश्यकता थी जो उस व्यवसाय को धनोपार्जन या उज्ज्वल भविष्य के लिए नहीं अपितु एक पवित्र ध्येय के रूप में अपनाए । **[2]**

ii) आचार्य की निराशा का कारण था कि युवकों में अधिकांश रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो थे, विषय से भी परिचित थे लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो पवित्र ध्येय होता है उसका सभी में अभाव था । निराश होकर उन्होंने स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया । **[2]**

iii) आचार्य ने दोनों युवकों की परीक्षा लेने के लिए उन्हें एक पदार्थ देकर दो दिन के भीतर उसका रसायन तैयार कर लाने को कहा । उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि इस बहाने से वह इस कार्य में आने वली बाधाओं के प्रति युवकों के व्यवहार एवं मानसिकता की परख करना चाहते थे । **[2]**

iv) दूसरा युवक इसलिए रसायन तैयार नहीं कर सका था क्योंकि जाते समय उसे मार्ग में सड़क दुर्घटना में घायल एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था जिसकी सेवा में उसका सारा समय व्यतीत हो गया था । इस घटना से इस युवक की संवेदनशीलता एवं उदारता का गुण स्पष्ट होता है । **[2]**

v) आचार्य ने अपना सहायता दूसरे युवक को चुना क्योंकि उसमें परोपकार की भावना थी । आचार्य के अनुसार पीड़ा से कराहते किसी व्यक्ति की उपेक्षा करने वाला रसायनशास्त्री नहीं हो सकता । **[2]**

A.4

i) (a) रसायन - रासायनिक **[½]**

(b) नुकसान - नुकसानदायक **[½]**

ii) (a) बाधा - अड़चन, विघ्न **[1]**

(b) पीड़ा - दर्द, कष्ट **[1]**

iii)	(a) अंत × आदि	[½]
	(b) पवित्र × अपवित्र	[½]
	(c) निराशा × आशा	[½]
	(d) भविष्य × भूत	[½]
iv)	(a) अतिथि - आतिथ्य	[½]
	(b) निपुण - निपुणता	[½]
v)	(a) **टका सा जवाब देना** - मैंने अपने मित्र से एक घण्टे के लिए पुस्तक माँगी थी परन्तु उसे भी पढ़नी थी, अत: उसने टका-सा जवाब दे दिया ।	[1]
	(b) **सिक्का जमाना** - मेरे मित्र ने नदी में डूबते बच्चे को बचाकर लोगों पर अपना सिक्का जमा लिया ।	[1]
vi)	(a) अन्त में आचार्य को कोई **आशा** न रही ।	[1]
	(b) वह मुझे अति प्रिय **लगेगा** ।	[1]
	(c) उसका कार्य **प्रशंसनीय** था ।	[1]

❖❖❖❖